आलू

आलू सब्जियों में भारत की एक प्रमुख फसल है तथा देश को खाद्य में आत्म-निर्भर बनाने में आलू का महत्वपूर्ण स्थान है। यह शीतोष्ण क्षेत्र की फसल होते हुए आजकल ऊष्ण कटिबन्धी तथा उपोष्ण कटिबन्धी क्षेत्रों में भी सफलतापूर्वक उगायी जा रही है। इसकी खेती के लिये भारत की जलवायु विशेष रूप में उपयुक्त है, इसकी फसल कम समय में ही तैयार हो जाती है। इसकी खेती विभिन्न प्रकार फसल चक्रों के अन्तर्गत अपनायी जा सकती है।

भूमि :– जैविक पदार्थो से भरपूर हल्की दोमट भूमि आलू की खेती के लिए उपयुक्त है।

उन्नत किस्मः– अगेती किस्मः (80–90 दिनों मैं तैयार होने वाली) कुफरी चन्द्रमुखी, कुफरी कुबेर (O.N.-2236), कुफरी पुखराज, कुफरी ज्योती, कुफरी अशोका, कुफरी सूर्या, कुफरी रूपाली।

मध्यम किस्मः– (100–110 दिनों में तैयार होने वाली) कुफरी बहार, कुफरी बादशाह, कुफरी ज्योति, कुफरी लालिमा, कुफरी कंचन, कुफरी अशोका, कुफरी पुष्कर, कुफरी अरूण।

पिछेती किस्मः– (120 इससे अधिक दिनों में तैयार होने वाली) कुफरी सिन्दूरी, कुफरी जीवन, कुफरी देवा।

बीज दरः– 8–12 क्विंटल प्रति एकड़। 20–30 ग्राम से कम वजन का कंद नहीं लगाना चाहिए।

आलू बोने का समयः– 10 अक्टूबर से 10 नवम्बर तक।

बोने की दूरी :– कतार से कतार – 50 सें0मी0, कंद से कंद – 20 सें0मी0

खाद तथा उर्वरक की मात्रा (प्रति एकड़):–

गोबर खाद	– 80 – 100	क्विंटल
यूरिया	– 100	किलो
सिंगल सुपर फास्फेट	– 240	किलो
म्युरियेट ऑफ पोटाश	– 60	किलो

यूरिया की आधी मात्रा, फास्फेट एवं पोटाश की पूरी मात्रा आलू लगाते समय दें तथा यूरिया की शेष मात्रा मिट्टी चढ़ाते समय दें।

सिचाईंः– अंकुरण निकलने के समय तथा आवश्यकतानुसार 10–12 दिनों के अंतर पर सिंचाईं करें। लेकिन, आलू खोदने के दो सप्ताह पहले सिंचाईं बंद कर दें।

खरपतवार तथा उनका नियंत्रण : कुछ मुख्य खरपतवार, जैसे बथुआ, प्याजी और पत्थरचट्टा आदि आलू की फसल को विशेषतः हानि पहुँचाते है। इनकी रोकथाम के लिए खरपतवार नाशक दवा मेटाबुजिन 0.75 किलो a.i.- का 600-800 लीटर या ऑक्सीफ्लूरोफेन 0.5 लीटर प्रति हेक्टर की दर से अंकुरण से पूर्व छिड़काव करना चाहिए।

खुदाई और उपज : आलू की फसल आमतौर पर 3-4 महीनो मे तैयार हो जाती है परन्तु यह किस्मों पर निर्भर करता है। जब पौधे पीले पड़ जाएँ तथा डंठल सूखने लगे तो भूमिके ऊपर वाले भाग को काट देना चाहिए तथा इसके 10 दिन बाद खुदाई करते हैं। ऐसा करने से आलू का छिलका सख्त हो जाता है और जल्दी खराब नही होता। कंदो की खुदाई छोटे पैमाने पर फावड़े और बड़े पैमाने पर बैलों या ट्रैक्टर द्वारा की जाती है। खुदाई के समय ध्यान रखें की आलू कटे नहीं। खुदाई के बाद कंदों को उनके आकार के अनुसार पृथक कर लेना चाहिए। पृथक करने के बाद सामान्य तापमान पर छायादार कमरों में लगभग एक सप्ताह तक सुखा लेना चाहिए। इससे कंदों में बाह्य वातावरण के प्रतिकूल प्रभावों को बर्दाशत करने की क्षमता आ जाती है। आलू की औसत उपज 100-150 क्विं./एकड़ है।

भंडारण : इसमें सड़न तथा गलन की क्रिया वातावरण के कुप्रभाव से शीघ्र होने लगती है। इसलिए इसको सुरक्षित रखने के लिए इसका भंडारण शीतगृह में तुरंत कर देने की आवश्यकता पड़ती है। ऐसा विशेषकर मैदानी भागों में जरूरी होता

है जहाँ आलू की खुदाई के तुरंत बाद तापमान बड़ी तेजी के साथ बढ़ता है। इस परिस्थिति में इसका उचित भंडारण न किए जाने पर कंदों के सड़ने, सिकुड़ने तथा सूखने के कारण काफी क्षति होती है। आलू के भंडारण न किए जाने पर कंदों के सड़ने, सिकुड़ने तथा सूखने के कारण काफी क्षति होती है। आलू के भंडारण का सर्वोत्तम स्थान शीतगृह है। जिन स्थानों पर शीतगृहों की सुविधा न हो, वहाँ आलू के देशी भंडारों में रखा जा सकता है। इस तरह के देशी भंडार, घास-फूस की छत वाले तथा ठंडे छायादार स्थानों या वृक्षों के नीचे बनाने चाहिए। भंडार के अंदर लकड़ी के रैक में 20-30 सेंटीमीटर मोटी तहों में रेत से ढ़क कर आलू रखना चाहिए। दिन के समय भंडार के रोशनदानों को बंद रखना चाहिए, जिससे अंदर का तापमान कम रहे तथा रात को कुछ समय के लिए इन्हें खोल देना चाहिए। आवश्यकतानुसार समय-समय पर सड़ी गली तथा क्षतिग्रस्त कंदों की छँटाई करते रहना चाहिए। शीतगृहों में तापमान और नमी दोनों का प्रमुख स्थान है। इसके लिए 2-4^0 सेंटीग्रेड तापमान तथा 75-80% आपेक्षिक आर्द्रता की आवश्यकता पड़ती है।

पौध संरक्षण : कीट

1) माहू : यह हरे रंग का होता है और पत्तियों से रस चूसता है। यह कीट आलू में विषाणु रोग भी फैलाता है।

रोकथाम : 1 मि.ली. इमिडाक्लोरपिड (17.8 एस.एल.) प्रति 3 लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिन के अंतराल पर 2 बार छिड़काव करें।

2) पत्तियों का फुदका : यह कीड़ा पत्तियों का रस चुसता है। आरंभ में कीट ग्रस्त पौधों की पत्तियाँ मुड़ जाती है।

रोकथाम : बुप्रोफेन्जिन (5%) 1 मि.ली. 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

3) आलू का कुतरा : ये कीड़े पौधे को जमीन की सतह से काट देते हैं।

रोकथाम : 1.5 मि.ली. क्विनॉलफॉस 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

4) आलू का कंद मोथ : यह कीट आलू को खेत से भंडारगृह तक नुकसान पहुँचाता है। इसकी सूंडियाँ कंद के भीतर घुसकर उसे खाती है फलस्वरूप आलू खोखला होकर सड़ने लगता है।

रोकथाम : फोरेट 10 जी. का 10 किलो/हे. के हिसाब से व्यवहार करें या बीज वाले आलू को भंडारित करने से पहले 3 ग्राम/ली. बोरिक एसिड घोल में मिलाकर 10 मिनट छाया में सुखा लें।

रोग एवं रोकथाम

1) अगेती झुलसा : इसके प्रकोप से पत्तियों पर काले, पीले या भूरे रंग के छोटे-छोटे धब्बे पड़ जाते हैं। ये धब्बे शुरूआत में पत्तियों के किनारे पर दिखाई देते हैं।

2) पछेती झुलसा : पहले पत्तियाँ तथा तनों पर भूरे बैंगनी धब्बे दिखाई पड़ते हैं यदि रोकथाम में देर हो जाए तो यह कंद तक पहुँच जाता है और सड़न पैदा कर देता है।

रोकथाम : दोनों प्रकार के झुलसा के रोकथाम के लिए टेबुकानेजोल (25%) 1 मि.ली. दवा का प्रति लीटर पानी घोल बनाकर बोने के 40 दिन बाद से 15 दिन के अंतराल पर 2 छिड़काव करना चाहिए या इप्रोवेलीकार्ब 5.5%+प्रोपीनेब 61.25% डब्लू.पी. का 2-2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

3) मोजेक : पत्तियों पर हल्के हरे-पीले चित्तियों से लेकर कई आकार में होते हैं। पत्तियों तथा आलू का भी आकार छोटा हो जाता है।

रोकथाम : 1) प्रमाणित एवं रोग मुक्त बीजों का प्रयोग।

2) रोगग्रस्त पौधों को खेत से निकालकर जला देना।

3) विषाणु के रोकथाम के लिए 1 मि.ली. इमिडाक्लोरपिड 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।